विषय- संस्कृत, बी॰ ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा) डॉ॰ओम प्रकाश आर्य
तृतीय वर्ष, पंचम पत्र महाराजा कॉलेज, आरा
वैदिक साहित्य का इतिहास दिनांक - 23/07/20
ऋग्वेद का रचनाकाल (क्रमशः पूर्व से आगे)

③ बाल गंगाधर तिलक

इन्होंने ज्योतिष गणना के आधार पर ऋग्वेद की रचना का काल 6000 ई॰ पू॰ से 4000 ई॰ पू॰ माना है। इन्होंने विभिन्न नक्षत्रों में वसन्त-संपात (Vernal Equinox) के आधार पर यह तिथि निर्धारित की है। उन्होंने वैदिक काल को चार भागों में विभक्त किया है और विभिन्न स्तर में वैदिक साहित्य के अंगों का उल्लेख

Scanned with CamScanner

किया है।

काल	ई० पू० समय	दृष्ट या प्रणीत ग्रन्थ
(1) अदितिकाल	6000 - 4000	निविद मन्त्र (गद्य-पद्यात्मक, यज्ञिय विधि वाक्य - सूक्त)।
(2) मृगशिराकाल	4000 - 2500	ऋग्वेद के अधिकांश सूक्त।
(3) कृत्तिकाकाल	2500 - 1400	चारों वेदों का संकलन, तैत्तिरीय संहिता और कुछ ब्राह्मण ग्रन्थ।
(4) अन्तिम काल (सूत्रकाल)	1400 - 500	सूत्र ग्रन्थ और दर्शन ग्रन्थ।

उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि वैदिक मंत्रों की रचना 6000 ई०पू० से प्रारम्भ हो गई थी, किन्तु उसका परिष्कार, संकलन और संहिताख्य 2500 ई०पू० से 1400 ई०पू० के मध्य हुआ है।

श्री तिलक ने निष्कर्ष दिया है कि यदि वेदों का रचनाकाल 4000 ई० पू० भी मान लिया जाए तो पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों के परस्पर विरोधी मतों का सामंजस्य हो जाएगा। इस प्रकार उन्होंने 4000 ई०पू० को वेदों का रचना काल मानने पर बल दिया है।

गणना का प्रकार

श्री तिलक और पं० शंकर बालकृष्ण दीक्षित की गणना का आधार एक ही है। नक्षत्रों की संख्या 27 है। सूर्य का संक्रमण वृत्त या राशि-चक्र (zodice) 360 डिग्री का है। सभी नक्षत्रों की पारस्परिक दूरी समान नहीं है, तथापि उसको समान मानकर 360 डिग्री को 27 से भाग देने पर 13½

डिग्री प्रत्येक नक्षत्र की दूरी सिद्ध होती है। प्रत्येक नक्षत्र अपने स्थान से समयानुसार पीछे हटता रहता है। एक नक्षत्र को एक डिग्री पीछे हटने में 72 वर्ष लगते हैं। इस प्रकार एक नक्षत्र को $13\frac{1}{3}$ डिग्री पीछे हटने में (अर्थात् दूसरे नक्षत्र के स्थान पर पहुँचने में) $72 \times 13\frac{1}{3} = 960$ वर्ष लगते हैं।

श्री दीक्षित ने शतपथ-ब्राह्मण का एक महत्त्वपूर्ण अंश उद्धृत किया है – 'अथैता एव भूयिष्ठा यत् कृत्तिकास्तद् भूमानमेव एतदुपैति, तस्मात् कृत्तिकास्वादधीत। एता ह वै प्राच्यै दिशो न च्यवन्ते, सर्वाणि ह वा अन्यानि नक्षत्राणि प्राच्यै दिशश्च्यवन्ते'। शतपथ ब्राह्मण 2-1-2।

इससे ज्ञात होता है कि शतपथ ब्राह्मण के रचना काल में कृत्तिकाएँ ठीक पूर्वीय बिन्दु पर उदय होती थीं। आजकल वसन्त संपात (Vernal Equinox) पूर्वा भाद्रपदा के चतुर्थ चरण में है। इस प्रकार ज्ञात होता है कि कृत्तिका नक्षत्र (कृत्तिकाएँ) अपने स्थान से $4\frac{1}{2}$ नक्षत्र (भरणी, अश्विनी, रेवती, उत्तरा भाद्रपदा होते हुए) पीछे हट आया है। 960 को $4\frac{1}{2}$ से गुणा करने पर, $960 \times 4\frac{1}{2} = 4560$ वर्ष पहले कृत्तिका में (शतपथ ब्राह्मण के काल में) वसन्त संपात हुआ होगा, अर्थात् लगभग 2500 ई० पू० में शतपथ ब्राह्मण की रचना हुई होगी।

श्री तिलक इसी गणना को आधार मानकर ऋग्वेद में प्राप्त कुछ मन्त्रों के आधार वसन्त संपात मृगशिरा नक्षत्र में मानते हैं और फिर आगे बढ़कर पुनर्वसु तक ले जाते हैं। मृगशिरा से कृत्तिका 2 नक्षत्र पहले है और पुनर्वसु से 4 नक्षत्र पहले है। एक नक्षत्र की दूरी पीछे हटने में 960 वर्ष (लगभग 1000 वर्ष) लगते हैं। मृगशिरा में वसन्त संपात मानने

पर ऋग्वेद का रचनाकाल 4560 + 1920 = 6480 वर्ष (लगभग 6500 वर्ष) पूर्व, अर्थात् लगभग 4500 वर्ष ई०पू० होता है। यदि पुनर्वसु में वसन्त संपात मानें तो लगभग 2 हजार वर्ष और बढ़ जाएँगे, अर्थात् 6500 ई०पू०। इसको श्री तिलक ने सुविधा के लिए 6000 ई०पू० मान लिया है।

Scanned with CamScanner